P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

शब्द भावों से परे शख्सियत – डॉ. मधु भट्ट तैलंग

मैनेजर लाल बैरवा
वरिष्ठ शोध अध्येता,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर

सारांश

सांसारिक मानोवृत्ति है कि समय के साथ परिवर्तन निश्चित है लेकिन भारतीय परमपराऐं अपनी सदियों से अमिट ऐतिहासिक छाप स्वर्णाक्षरों में अंकित किए हुए है। अगर बात की जाये भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्रुवपद शैली की तो आप सब जानते हैं संगीत सम्राट तानसेन की इस गायन में विश्वविख्यात पहचान है। संगीत के बदलते स्वरूप के साथ इसी शैलीं से अनेक शैलियां श्रृजित हुई जिनमें ख्याल,टप्पा, ठुमरी, भजन, गीत गज़ल आदि। संगीत का स्वरूप हमेशा अनवरत परिवर्तित रहा है। ये गायिकी पुरुष प्रधान है जिसमें महिला गायन करे अकल्पनीय है लेकिन डॉ .मधु भट्ट तैलंग इस ध्रुवपद गायिकी की अपनी विश्वस्तरीय अमिट छाप रखती हैं। आप राजस्थान की प्रथम एकमात्र महिला ध्रुवपद गायिका हैं आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व शब्द एवं भावों से परे का है। आपका गायन आकाशवाणी द्वारा ए ग्रेड है आप वर्तमान में ललित कला संकाय डीन एवं विभागाध्यक्षा, संगीत–विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय में पदासीन हैं। आप अच्छी कलाकार के साथ एक सच्ची गुरु–प्रशिक्षिका है। आप पर सम्पूर्ण राजस्थान को गर्व है कि आपका कृतित्व भारतीय शास्त्रीय परम्परा के साथ ही नवाचारात्मक कन्टेम्परेरी म्यूजिक के लिए वरदान सावित हो रहा है। आधुनिक पीढ़ी से संगीत की परम्पराओं के साथ जुड़ाव के लिए ऐतिहासिक कार्य आप और आपके गुरु एवं पिताश्री पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग जी द्वारा श्रृजित ''इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट एवं रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र'' संस्थाऐं विश्वस्तरीय पहिचान बनाऐं हुए है। जिनमें बालवर्ग से लेकर शोधवर्ग के प्रशिक्षार्थी प्रतिवर्ष निःशुल्क गुरुशिष्य परम्परा माध्यम से प्रशिक्षण ले रहे हैं। देश ही नहीं विदेशी छात्र आपसे व्यक्तिश ध्रुवपद की गहन तालीम गंडाबंद शागिर्द के रूप में ले रहे हैं। आप देस विदेशी विश्वविद्यालयों में ध्रुवपद गायन के साथ शोधपर्यवेक्षक, पाठ्यक्रम निर्धारित कमेटी की मेंम्बर रही हैं। आपका व्यक्तित्व अकल्पनीय है आपका गायन सुनकर हर कोई अचम्भित हो सकता है आपका शैक्षणिक स्तर उच्चस्तरीय है। आप जैसी शख्सियत से राजस्थान विश्वविद्यालय का नाम भी विश्वस्तरीय पहिचान रखता है। आप पर हम सबको गर्व है। हमने माँ सरस्वती को देखा नहीं लेकिन आप वर्तमान में साक्षात सरस्वती का रूप ही हैं। संगीत के लिए आपका समर्पण विद्यार्थियों के लिए आपका योगदान अविस्मरणीय रहेगा। भौतिकवादी युग में आप साक्षात इतिहास हैं। जिसका गवाह आपका कृतित्व हैं। आप शास्त्रीय संगीत की महानतम शख्सियतों में शुमार हैं।

मुख्य शब्द : शास्त्रीय संगीत, ध्रुवपद, शख्सियत, अनमोल धरोहर, एकमात्र महिला, विभागाध्यक्ष, गुरू–शिष्य परम्परा, पचतंत्री वीणा आदि।

प्रस्तावना

राजस्थान को गुलाबी नगरी में सदियों से भारतीय शास्त्रीय संगीत का घरानेगत अपना ही इतिहास रहा है। राजधानी जयपुर का गुणीजन घराने का ऐतिहासिक विवरण इसका प्रमुख गवाह है। यहाँ पर शास्त्रीय गायन वादन के अपने पीढ़ी–दर–पीढ़ी कलाकार, आज भी देस–दुनिया अपना परचम स्थापित करे हुए हैं उन्हीं कलाकारों में एक घराना जो ऐसी शख्सियत की बात करने जा रहा हूँ जिसका कृतित्व एवं व्यक्तित्व शब्द और भावों से परे है जिसके बारे में हर शब्द–भाव की महत्ता कम नज़र आ रही है आप समझ गये होंगे वो शख्यियत है जिनके सामने अलंकरण भी फीके नज़र आयेंगे,जैसे विदुषी,वाग्येकार राजस्थान की एकमात्र प्रथम ध्रुवपद गायिका,विश्व की सौ शक्तिशाली महिलाओं में शामिल एवं राजस्थान विश्वविद्यालय में डीन,फैकल्टी ऑफ फाइन–आर्ट, संगीत विभाग विभागाध्यक्षा डॉ. मधु भट्ट तैलंग' हमारे राजस्थान की ध्रुवपद शैली की प्रथम व्यक्तित्व है इनका यश देश में ही नहीं विदेशों में भी विख्यात है जैसा मुझे दस वर्षों में व्यक्तिगत उन्हें जानने और उनके कृत कार्यों का देखने

सुनने और आत्मसात करने का मौका परमेश्वर ने दिया परमपिता परमेश्वर का मैं धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ कि सदियों से ध्रुवपद की वंश परम्परा को सम्पूर्ण युग में प्रचारित प्रसारित करने का नेतृत्व रूप आज डॉ. मधु भट्ट तैलंग कर रही हैं। मुझे ऐसा महसूस होता है कि इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व एक गहरे महासागर की भाँति प्रतीत होता है कितनी भी विपदाऐं आऐं कितना भी भूचाल आऐ पृथ्वी कितनी भी अपने आप को नष्ट करे आखिर महासागर अपने में विलीन कर लेता है जैसा मुझे महसूस हुआ कि इनका हम जैसे प्रशिक्षणार्थी कितनी भी बेपरवाही से काम करे, कितने भी हताश हो लेकिन जब आप से मिले हैं तो सारा चैप्टर जो नकारात्मकता की चादर लेपित रहता है उनके आशीष और एक दिव्य शक्ति से सकारात्मकता के सारे रास्ते इज़ाद कर देता है। कभी –कभी मुझे महसूस होता है कि हमने कभी देवी सरस्वती को नहीं देखा और चमत्कारिक शक्तियों के बारे में मात्र सुना है लेकिन मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि डॉ. मधु भट्ट तैलंग एक आम इन्सान नहीं हैं ये कोई ऐसी महान दिव्यशक्ति है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की ऐसी अखण्ड ज्योति जलाऐ हुए हैं जो सदियों तक सम्पूर्ण विश्व में जलती रहेगी।

साहित्यावलोकन

इनका साहित्य एवं प्रायोगिक पक्ष बहुत मजबुत है। मातृशक्ति को मानने वाले पं. जी ने 1982 में अपने बाबा एवं पिताकी साधनास्थली में वर्तमान 118, रसमंजरी, गैटोर रोड, ब्रह्मपुरी, जयपुर में अपनी माता' 'रसमंजरी ' के नाम से उस निवास बनाने का मानस बनाया जो 1984 में फलीभूत हुआ, जहां उन्होंने निवास का नामकरण ' रसमंजरी ' रखा और उसमें रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र नाम से संस्था की औपचारिक शुरुआत की। यहां संगीत का घरानेदार प्रशिक्षण शुरु किया साथ में ही शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर लगाये गये, यहां शनिवारीय सभा प्रारम्भ की गई जहां पं. जी स्वयं एवं उनें पुत्र –पुत्रियां गायन वादन करते थे यह छोटी सी सभा फिर संगीत बैठक में तब्दील हो गई, जिसमें जयपुर के गुणीजनों के समक्ष संगीत कलाकार अपने गायन–वादन को प्रस्तुत करते हुए अपने के निखारते हैं। इस बैठक में फिर जयपुर से बाहर के गुणीजनों के समक्ष संगीतकार अपने गायन वादन को प्रस्तुत करते हुए अपने को निखारते थे। इस बैठक में फिर जयपुर से बाहर राजस्थान और देश के संगीतज्ञ आकर गाने बजाने लगे। गौरतलब है कि सन् 1984 से 2014 के अंतिम पड़ाव तक अबाध एवं निरंतर रूप से संगीत–सभाएं संगीत–समारोह एवं संगीत प्रशिक्षण–शिविर एवं कार्यशालाओं को आयोजित कर संस्था निरंतर रूप से सक्रिय रही है। आये दिन आप नवाचार धर्मी रही है।

शोध पत्र का उद्देश्य

पुरुष प्रधान गायिकी ध्रुवपद में महिलाऐ नगण्य हैं क्योंकि महिलाओं का कंठ संस्कार इस स्तर का नहीं होता कि इस शैली में गायन कर सकें इसमें विभिन्न गमकों एवं लयकारियों का गायन में निर्वहन कर सके लेकिन इसके विपरीत डॉ.मधु भट्ट तैलंग ऐसी शख्सियत हैं जिनके सामने सारे शब्द फीके एवं मन भावोत्तर हो सकता है। आपकी दशकों की साधना, गुरु–शिष्य परम्परा का निर्वहन करना एवं गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान से विश्वस्तरीय पहचान कायम रखना। आपकी सृजनधर्मिता हजारों कलाकारों से बढ़कर है आप का जन्म सिर्फ संगीत को समर्पित है। मुझे ऐसा लगता है कि आप वर्तमान का ऐसा दिव्य रूप हैं जिसकी मात्र परछाई एवं आशीष से हम जैसे प्रशिक्षणार्थियों के जीवन में संगीत के सच्चे मायने प्रवेश कर सकते हैं। आज इस शैली का शिक्षण–प्रशिक्षण नगण्य है लेकिन आप द्वारा आयोजित कार्यशाला या अभिरुचि शिविर में ध्रुवपद शैली के साथ कन्टेम्परेरी म्यूजिक की नवाचारात्मक शैली विकसित करना, आप द्वारा महीने भर की जून वर्कशाप में ध्रुवपद की सम्पूर्ण वानगी बालवर्ग में शोधवर्ग को प्रशिक्षण में नजर आती है। आज के दौर में ऐसी महान शख्सियतों द्वारा इस प्रकार से सच्ची सेवा करना अकल्पनीय है। वक्त रहते हमें ध्रुवपद गायन परम्परा को अपनाना चाहिए एवं संगीत सच्चे उद्गम स्थल को समझना बहुत जरूरी है। ध्रुवपद गायन परम्परा के बारे में फैली भ्रांतियों एवं मिथ्या धारणाओं को दरकिनार करने के लिए डॉ. मधु भट्ट तैलंग जैसी शख्सियत आज हमारे समक्ष हैं जो वर्तमान के साथ एक इतिहास हैं।

डॉ. मधु भट्ट तैलंग की पारिवारिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

डॉ. मधु भट्ट तैलंग का जन्म जयपुर में हुआ आपके पिता पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग एवं माता श्रीमती विमला भट्ट तैलंग।

आपके पिता विख्यात ध्रुवपद कलावंत, वाग्गेयकार एवं वर्षों तक यूनिवर्सिटी वनसथली विद्यापीठ में गायन विभाग में सच्चे संगीत गुरु रहे हैं। आपके परिवार का इतिहास लगभग 500 वर्षों से पीढ़ी दर पीढ़ी संगीत का सेवक रहा है। आपके पिताजी वरिष्ठ ध्रुवपदाचार्य रहे हैं। इनका संगीत क्षेत्र में योगदान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सराहनीय है। आपने सभी बच्चों को शिक्षा प्रदान की (1) शोभा (2) उषा (3) निशा (4) मधु (5) पूनम (6) रवि (7) आरती

सभी ने संगीत सीख कर अपनी अलग से पहचान बनाई है। डॉ. निशा भट्ट तैलंग जालौर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से सेवा निवृत्त हैं वो वरिष्ठ ख्याल गायिका हैं। इस से पूर्व आप बूंदी में भी महाविद्यालय में भी प्राचार्य रही हैं। डॉ. आरती भट्ट तैलंग भी, राजस्थान विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर हैं एवं नामचीन गायिका हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पं. रवि शंकर भट्ट तैलंग–आप जाने–माने प्रसिद्ध पंचतंत्री वीणा वादक हैं। आपने वायलिन वादन के साथ नवाचार करके पंचतंत्री वीणा का निर्माण किया है जो एक सराहनीय नवाचारात्मक कदम है साथ ही आप सुबोध कालेज में संगीत व्याख्याता पद पर आसीन है । संगीत की सेवा कर रहे हैं। आप हरफन मौला कलाकार हैं। आप गायन–वादन में अच्छी दखल रखते हैं। आप वादन में ध्रुवपद, धमार और ख्याल वादन में सिद्धहस्त हैं। आपकी संगीत क्षेत्र में एक उम्दा पहचान है। डॉ.मधु भट्ट तैलंग की सामाजिक पृष्ठभूमि पर बात करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि वे हर सामाजिक कार्यों में निःशुल्क गायन करती हैं। सामाजिक धरातलों पर एक खरे सोने की तरह रिश्तों का निर्वहन करती हैं। आप हर ज्वलंत हर सामाजिक मुद्दे पर अपनी गायन शैली में ध्रुवपद रचना के माध्यम से प्रदर्शन करती हैं। आपकी सृजन धर्मिता हजारों कलाकारों से बढ़कर है।

'' Dr Madhu Bhatt Tailang learnt music from her father – Pt Laxman Bhatt Tailang. the represe Dharuvapad tradition of Rajasthan. Though the style is considered to be too intricate for women. she difficultArt formAnd is the only lady singer of this tradition in Rajasthan.''[6]

शोधपत्र का उद्देश्य है कि आज कलयुग में नारी महिमा – दिव्य स्वरूप के बारे में जो डॉ. मधु भट्ट तैलंग से अपरिचित है जो संगीत से नहीं है। लेकिन संगीत आलेख पढ़ने के शौकीन हैं उनमें ध्रुवपद की संबद्धिता एवं सम्प्रेषिका से रूबरू कराना इसका मकसद है और सभी को बताना है कि हम सिर्फ छोटी सी जिन्दगी जी कर चले जाते हें सिर्फ शारीरिक सुख के लिए कमाते खाते हें लेकिन डॉ. मधु भट्ट तैलंग द्वारा कराये शोधकार्य अधिकतर यू.जी.सी. द्वारा अनुमोदित एवं रिसर्च अवार्डेड है क्योंकि आपके व्यक्तित्व का प्रभाव जो उच्च कौशल स्तरीय है आप मनोविज्ञान में खासी दखल रखती है।

सम्पूर्ण विश्वविद्यालय शिक्षण आप द्वारा गौरवान्वित है। वर्तमान में आप डीन, फैकल्टी आफ फाइन आर्ट एवं संगीत विभागाध्यक्ष है। इन उच्च पदाभारों को बखूबी निभाते हुए आप शिक्षण के प्रति समर्पित है। आप स्नातकोत्तर कक्षाओं के कालांश उसी तरह से लेती हैं जिस तरह से आप दशकों से लेती रही हैं। आप का वाक कौशल उम्दा प्रकार का है। आप से मिलने के बाद ऐसा लगता है कि किसी स्पेशल पावर के सम्पर्क में आ गये हैं। आप एक सभ्य महिला है मुझे लगता है कि किसी को संस्कार सीखना हो तो आप से सीखे आप हमेशा अपने से छोटे को प्यार, दुलार एवं बड़ों का सदैव सम्मान करती हैं। कहीं अगर कुछ गलत होता है तो आप उसके विपक्ष में ससम्मान अपना पक्ष रखती हैं। ये सब इसलिए है क्योंकि आप एक ऐसी सभ्य संस्कारित गुरु–शिष्य परम्परा के उच्च स्तरीय शिक्षण–प्रशिक्षण से निकली हैं। आपकी जीवन शैली सभी के लिए प्रेरणास्पद है एवं रहेगी। यह सार्वत्रिक सत्य है कि कला हमेशा चमक, ओज आकर्षण एवं संस्कारित करती है। कला ही मानव जीवन को गौरवमय बनाती है। आप एक सची कलाकार, उम्दा वाग्येकार सजग प्रशिक्षिका, उच्च स्तरीय प्रशासिका हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय संगीत आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व से प्रभावित हैं एवं गौरवान्दित हैं। आपका जीवन गुरु से ही सत्य मान अनुरागी रहा है और आप भी संगीत का जीवंत मन एवं कृतितव आप में विद्यमान है। आपका सृजनधर्म गुण के फलस्वरूप समय–समय पर अभि नवाचार दिखाई देते है जो हम सभी को प्रेरित एवं मार्गदर्शन का कार्य करते हैं ऐसा लगता है आपका व्यक्तित्व अकेला नहीं है आप में सैकड़ों सृजनधर्मो कलाकारों से उम्दा बोधिक लाब्धि है। आप एक ऐतिहासिक ध्रुवपद शैली की निर्वाहक, संवर्धक एवं सर्जक हें। साथ ही आप नवाचार के भी पक्षधर हें। आप मानती हें कि हमें जड़त्व के साथ न्याय करते हुए नवीन विधियों से आकर्षण एवं प्रबल जड़त्व स्थापित करना चाहिए।

राजस्थान विश्वविद्यालय में शैक्षणिक कार्यभार एवं शोध कार्य

राजस्थान विश्वविद्यालय में विगत–वर्षों से भारतीय शास्त्रीय शिक्षण संगीत का विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमानुसार आप अध्यापनरत हैं। आपके निर्देशन में बीस शोधकार्य हो चुके हैं। आप ध्रुवपद गायन की कलावंतिका, उम्दा वाग्गेकार हैं जिसका लाभ राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों को समय–समय मिलता रहता है आप धव्रुपद–धमार के साथ ख्याल गायन में भी महारत रखती हैं। आप की सृजनधर्मिता का लाभ विद्यार्थियों को मिलता रहता है आप का मत है कि सब कुछ सीखो लेकिन पक्के बनो, सच्चे बनो, जो सीखो उसे अच्छे से सीखो। आप विश्वविद्यालय में शिक्षण के प्रति इतना समर्पित हें कि आप कक्षा में किसी कारणवश एक विद्यार्थी मिला तो उसे विधिवत तरीके से वैसे ही सिखाती हें जैसे पूरी कक्षा को सिखाती हें। आपके शिक्षण में सृजनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शिक्षण प्रक्रिया का दर्शन होता है आप शिक्षण के साथ ही बच्चों में नैतिक चरित्र पर भी बल देती हें। विद्यार्थियों में आप को शिक्षण कालांश का काफी उत्साह रहता है। आपके संगीत प्रशिक्षण की तालीम घरानेदार पद्धति की भांति होती है। आप एक्सटेम्फोर गायकी सिखाती हैं साथ ही आलाप वेरियेशन, तान लेने की नवीन तकनीक प्रायोगिक रूप से आपके शिक्षण में दिखाई देता है। आप बड़ी कलाकार होने के साथ ही विद्यार्थियों के साथ शिक्षण के साथ न्याय करते हुए सभी के साथ आत्मीय भाव रखती हें जो कौशल से कमजोर विद्यार्थी है उनका आप उत्साहवर्द्धन करती हैं। उनके स्तर के आधार पर उन्हें गृह कार्य दिया जाता है कि इस तान का रियाज़ करके लाओ या इस तरह आलाप अभ्यास करो या इस तरह से ताल का रियाज़ करो, लयकारी अभ्यास करो, सभी स्तर के स्तर के विद्यार्थियों के साथ आप न्याय करती हें और अल्पकालीन कालांश में आप प्रशिक्षार्थियों के जीवन में गागर में सागर भर देती हें। आपके कृतित्व के साथ आपका व्यक्तित्व भी नतमस्तक करने योग्य है। आप नामचीन गायिकाओ में शुमार हें लेकिन आपके व्यक्तित्व में कहीं अहम का भाव नजर नहीं आता है। अक्सर देखा जाता है कि एक अच्छा कलाकार अच्छा गुरु नहीं होता लेकिन आप एक अच्छी गुरु एवं प्रशिक्षिका भी हैं। आपकी साहित्यिक समझ, क्रियेविटी, भाषा भी समझ से विद्यार्थी एवं शोधार्थी भी धन्य हो रहे हैं।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सच्ची गुरु– शिष्य परम्परा निर्वाहक

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ध्रुवपद के एकमात्र वर्तमान वरिष्ठ कलावंत, वाग्गयेकार पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग की सुपुत्री डॉ. मधु भट्ट तैलंग ने बाल्यकाल से ही ध्रुवपद के सुर साधना शुरु किया, आपके पिताजी एवं गुरु ने आपकी प्रतिभा को देखते हुए जीवन के लोरी काल में ध्रुवपद शैली का बीजारोपण करना शुरु किया। सवेरे प्रातःकालीन रियाज़ में आप और पिताजी एक साथ रियाज़ करना यूं।तो सभी भाई– बहन प्रातःकाल चार बजे नहा धोकर रियाज़ करते थे लेकिन आपका ध्रुवपद के प्रति समर्पण, आपकी अंतर्निहित प्रतिभा, आपकी सच्ची लगन को देखते हुए आपके गुरु एवं पिताश्री ने भी आपके लिए एक गुरु के रूप मे एक सच्चा समर्पण रखा। आपकी दूरगामी सोच को देखते हुए आपके पिताश्री ने गरु की प्रमुख भूमिका में कार्य किया और आपको सच्चे मायने में ध्रुवपद की तालीम दी। बचपन में ही आपको निरंतर रियाज एवं हर अंग से 'रागदारी की बारीकियां एवं राग के स्वर पक्ष के साथ ही ध्रुवपद शैली के साहित्यिक पक्ष को मजबूत करने के साथ ध्रुवपद की कठिन लयकारी एव।गमक अभ्यास के नवीन प्रयोगों से आपके गुरुजी ने आपको भरपूर रियाज करवाया, साथ में आपका एकेडमिक स्तर मजबूत करने के लिए आपका अध्ययन जारी रखा। पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग जी 500 वर्षीय परम्परा के संवर्धक एवं सम्प्रेषक हैं। उनकी तीक्ष्ण पारम्यता जो आपके व्यक्तित्व के बारे में पहले ही भांप लिया कि आप भविष्य की महानतम शख्सियतों में शुमार हो जायेंगी, आपके गायन को इस तरह से मांजा कि पुरुष प्रधान गायका कें साथ आप न्याय कर सको क्योंकि ये धीर गंभीर गायकी है जिसमें गमक लेना महिला के लिए असम्भव है लेकिन आपने गुरु वचनों का पालन किया और आप आज उनके आशीर्वाद से देश–दुनिया में अमिट छवि बनाये हुए हैं।

आप द्वारा संबर्धित एवं पोषित आपकी संस्थाऐं

आपकी दो संस्थाऐं हैं जिनका धैर्य मात्र विद्यार्थियों के हितार्थ एवं ध्रुवपद जैसी शुद्ध गायकी से युवा पीढ़ी में चेतना के स्वर स्थापित करना इन संस्थाओं का प्रमुख ध्येय है

इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट

विजयादशमी 2001 में इस संस्था की स्थापना ''ध्रुवपद धाम '' के नाम से पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग द्वारा की गई। देशी– विदेशी स्तर पर कार्य विस्तार को देखते हुए इस संस्था को 29 अगस्त 2004 को ''इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट ''के नाम से नवीन नाम दिया गया, जिसकी रजिस्ट्रेशन सं. CITA,T&J/Sec.12A(A)/ 36/12/ 2004- D 5/208 है। सुख का विषय है कि संस्था के अनेक कार्यों एवं उद्देश्यों को देखते हुए इन्कमटैक्स की धारा 80 जी के अंतर्गत इसे छूट प्रदान की गई है। इस ट्रस्ट में भारतीय संगीत और उसका आधारभूत पुरातन गायिकी ध्रुवपद की साधना के साथ समाज के हित में विविध कार्य विस्तार की योजना है।

रसमंजरी रसोपासना केन्द्र,जयपुर

''दिनांक 25 अप्रैल 2009 को जवाहर कला केन्द्र, जयपुर में रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र की रजत जयंती ''रसमंजरी शास्त्रीय सभा के नाम से मनाई गई थी।

मातृशक्ति को मानने वाले पं. जी ने 1982 में अपने बाबा एवं पिताकी साधनास्थली में वर्तमान 118, रसमंजरी, गैटोर रोड, ब्रह्मपुरी, जयपुर में अपनी माता 'रसमंजरी' के नाम से उस निवास बनाने का मानस बनाया जो 1984 में फलीभूत हुआ, जहां उन्होंने निवास का नामकरण 'रसमंजरी' रखा और उसमें रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र नाम से संस्था की औपचारिक शुरुआत की। यहां संगीत का घरानेदार प्रशिक्षण शुरु किया साथ में ही शास्त्रीय संगीत के प्रचार – प्रसार हेतु निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर लगाये गये, यहां शनिवारीय सभा प्रारम्भ की गई जहां पं. जी स्वयं एवं उनें पुत्र –पुत्रियां गायन वादन करते थे यह छोटी सी सभा फिर संगीत बैठक में तब्दील हो गई, जिसमें जयपुर के गुणीजनों के समक्ष संगीत कलाकार अपने गायन– वादन को प्रस्तुत करते हुए अपने के निखारते हैं। इस बैठक में फिर जयपुर से बाहर के गुणीजनों के समक्ष संगीतकार अपने गायन वादन को प्रस्तुत करते हुए अपने को निखारते। इस बैठक में फिर जयपुर से बाहर राजस्थान और देश के संगीतज्ञ आकर गाने बजाने लगे। गौरतलब है कि सन् 1984 से 2014 के अंतिम पड़ाव तक अबाध एवं निरंतर रूप से संगीत–सभाऐं संगीत–समारोह एवं संगीत प्रशिक्षण –शिविर एवं कार्यशालाओं को आयोजित कर संस्था निरंतर रूप से सक्रिय रही है।''[2]

संस्थागत उद्देश्य

इन संस्थाओं के माध्यम से ध्रुवपद जैसी क्लिष्ट समझी जाने वाली गायकी को युवा पीढ़ी को जोड़ना उन्हें निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करना देशी– विदेशी विद्यार्थियों का चयन करके गहन प्रशिक्षण प्रदान करना, वर्ष में एक अखिल भारतीय ध्रुवपद समारोह आयोजित करना, ध्रुवपद के अलावा अन्य कलाओं के वरिष्ठ कलाकारों का सम्मान करना, विशिष्ट आयोजनों का प्रावधान करना, ध्रुवपद पर शोधात्मक कार्य करना, निर्धन होनहार विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान करना, ध्रुवपद से संबंधी आलेख देशी– विदेशी पत्र– पत्रिकाओं में प्रकाशित करना, जरूरतमंद एवं निर्धन कलाकारों को दान चंदा आदि द्वारा सहायता प्रदान करना ये प्रयास दोनों संस्थाओं की सहभागिता में किया जाता है।

डॉ. मधु भट्ट तैलंग का संगीत के प्रति सच्चा समर्पण हम सब के समक्ष है उनका जन्म इस सदी के उन नक्षत्रों में शुमार होने के लिए हुआ है। जिसकी चमक सदियों तक अमिट एवं प्रज्जवलित रहेगी। आपकी दोनों संस्थाओं के माध्यम से देशी–विदेशी स्तरीय कलाकार उवं रसिकजन इस ध्रुवपद परम्परा से जुड़ी हुई है और हमेशा कायम रहेगी।

डॉ. मधु भट्ट तैलंग ध्रुवपद– धमार गायन कार्यक्रम

ध्रुवपद की पर्याय माने जाने वाली शख्सियत डॉ. मधु भट्ट तैलंग के ध्रुवपद गायन के कार्यक्रम देश ही नहीं विदेशों में भी पहचान बनाये हुए हैं। इनका गायन कार्यक्रमों का इतिहास बाल्य–युवावस्था से ही स्थानीय एवं बाहरी स्थानीय रहा है। यू तो हर वर्ष इनके कई कार्यक्रम आयोजित होते हैं लेकिन साथ ही आकाशवाणी दूरदर्शन

पर भी समय– समय पर इनकी रिकार्डिंग की जाती है इनके कार्यक्रमों की एक छोटी सी बानगी निम्न है–

(1) तानसेन समारोह
(2) हरिदास सम्मेलन
(3) ओमकारनाथ ठाकुर समारोह
(4) अलाउद्दीन खां समारोह
(5) आई. सी.सी.आर द्वारा अनुमोदित कार्यक्रम
(6) यूरोप एवं यू. एस. ए अनेक समारोह

उपरोक्त नामचीन कार्यक्रमों में सतत रूप से आपके कार्यक्रम होते रहते हैं। साथ ही कई शहरों में ध्रुवपद कार्यक्रम एवं गायन कार्यशालाओं की आपकी अलग ही पहचान है। आपके सी डी एवं एलबम रिलीज़ हुए हैं।

डॉ. मधु भट्ट तैलंग सम्मान– अवार्ड

आप कई नामचीन अवार्ड एवं उपाधि से सम्पन्न रही हैं आपका यश दिनों–दिन सूर्योदय की भांति प्रकाशित हो रहा है। आपको 50 से अधिक अवार्ड एवं उपाधि मिल चुकी है। कुछ प्रमुख बानकी निम्न हैं–

1. डागर घराना स्वर्णपदक
2. स्वाति तिरुन्नाल
3. महारानी किशोरी केवर अवार्ड
4. सुरमणी अवार्ड
5. राष्ट्रीय शिक्षा रत्न
6. शाने मौसिकी
7. राजस्थान रत्न
8. श्रेष्ठ कला आचार्य
9. राजस्थान राज्यपाल द्वारा सम्मान
10. मैसेच्यूसट यूनिवर्सिटी सम्मान
11. बी बी सी लंदन अंतर्राराष्ट्रीय सम्मान
12. उदयपुर,वाराणसी एवं जयपुर घराना सम्मान
13. नारी शक्ति सम्मान
14. श्रेष्ठ साहित्यकार सम्मान

ऐसे ही अनेक सम्मान आपको मिलते रहे है और मिलेंगे। आपकी शख्सियत ही ऐसी है कि आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही बेमिसाल हैं आप स्वयं कलाकार न होकर कला हैं जिसमें सौंदर्य, भाव, रस, सिमेट्री, परिष्कार, शुद्धता, आकर्षण है ऐसा प्रतीत होता है कि आप इन्सान के रूप में कोई दिव्य आत्मा ही हें जिसके माध्यम से संगीत जगत का सूर्य चमक रहा है।

आपके निर्देशन में 22 विद्यार्थी शोध उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आपके 100 से अधिक लेख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। आपके द्वारा दो पुस्तकों का लेखन चार पुस्तकों का सम्पादन किया जा चुका हैं।।

केन्द्रीय व राजस्थान संगीज अकादमियों, संस्कृति विभाग, भारत सरकार द्वारा अनेक छात्रवृत्ति फैलोशिप एवं प्रोजेक्ट भी प्राप्त हुए हैं। आपने ध्रुवपद कन्टेम्परेरी क्रियेटिव आर्ट ट्रेडिशन की संरचना कर ध्रुवपद के क्षेत्र में परम्परा के साथ अनेक नवीन रागों, तालों, नए रचनाकारों, शैलियों, रागमालाओं एवं समसामयिक संदर्भों यथा स्वच्छता अभियान, नेपाल त्रासदी,एवं बेटी बचाओ आदि क्षेत्रों में भी ध्रुवपद को ढालकर नवाचार प्रस्तुत कर अपनी अलग पहचान बनाई है।''

बाल्य उमर में साधे आपने
ध्रुवपद के चारों अंग
कोकिल मधुर कंठ जीवन में
कण–मींड गमक के संग
गुडडा–गुड़िया खेल उमर में
स्वर, लयकारी और मृदंग
युवा उमर सहेलिया संग ना
मित्र रही पिता–गुरु के संग
शिक्षा ले ली उच्च स्तरीय
लेकिन रही ध्रुवपद के संग
सखा– सहेली कोई ना पाली
ध्रुवपद रहा जागृत अंग
बचपन से यौवन कब गुजरा
हर पल जिया ध्रुवपद रंग

– **मैनेजर लाल बैरवा**

शोध पत्र का निष्कर्ष

इस शोध पत्र का निष्कर्ष (बालिका शिक्षा को लेकर) यह निष्कर्ष निकलता है कि वर्तमान संदर्भ में बालिकाओं, महिलाओं के साथ हो रहे उत्पीड़न, अत्याचार की बढ़ती घटनाओं के कारण अधिकतर नहीं चाहते लड़की पैदा हो, पढ़े आगे बढ़े अपनी जिन्दगी को सजाए,संवारे ऐसे समय में हमें आमजन तक डॉ. मधु भट्ट तैलंग जैसी शख्सियतों का उदाहरण पेश करना जरूरी है ताकि समाज के सोचने के नजरिये में परिवर्तन आ सके और महिलाऐं इस बात को समझ सके कि बालिकाओं को पढ़ना–लिखना कितना जरूरी है एवं समाज के सामने सिर उठाकर जीने के लिए ज्ञानवान होना अति आवश्यक है।

गुरु –शिष्य परम्परा निर्वहन को लेकर

वर्तमान संदर्भ शिक्षण प्रक्रिया में इस परम्परा का ह्रास हो रहा है। गुरु और शिष्य में अंतर्मन भावांतर होने के कारण उच्च स्तरीय कौशल संबंधी नहीं हो रहे हैं इसलिए आज ये कहावत सटीक हो रही है कि शिक्षण संस्था में कलाकार पैदा नहीं होते हैं इसी संदर्भ को झुटलाने के लिए डॉ. मधु भट्ट तैलंग ने सैकड़ों वर्कशाप फ्री लगाई और सच्चे समर्पण एवं सच्चे मन से कार्य प्रणाली के प्रभाव को विद्यार्थियों एवं जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणास्पद कार्य किया और ध्रुवपद जैसी विधा से जोड़ने एवं निःशुल्क प्रशिक्षण के लिए विद्यार्थियों को अपना अमूल्य समय सच्चे समर्पण के रूप में दिया है। उनका कहना है कि आप कहीं भी सीखें, कुछ भी सीखें लेकिन सच्चे मायने में सीखें अपने गुरु के प्रति सच्चा समर्पण रखें ताकि आप सच्चे मायने में कौशलवान बनें और अंतर्मन के राजनीतिकरण में न फंसें। आप ने इस परम्परा का बखूबी निर्वहन किया है। आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस परम्परा के कारण विश्वस्तरीय अमिट छाप रखता है। आपका मानना है कि हमें परम्पराओं का निर्वहन के साथ सच्चा समर्पण रखना चाहिए। आप स्वयं एक अच्छी गुरु के रूप मे स्थापित आप से सीखे शिष्य उच्च शैक्षणिक संस्थाओं में प्रोफेसर हैं साथ ही अच्छे ध्रुवपद के गायक

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

हें। आपकी सकारात्मक सोच का ही प्रतिफल है कि आप हरफनमौला कलाकार भी हैं। आपका ये योगदान सदियों तक प्रशिक्षकों के माध्यम से जीवंत रहेगा।

ध्रुवपद शिक्षण एवं भ्रांति निस्तारण को लेकर

इस शोध पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट हो जायेगा कि उच्च कक्षाओं तक शिक्षक ध्रुवपद प्रशिक्षण को लेकर भ्रांति प्रचारित करते रहते है कि ध्रुवपद खड़ी गायकी है नीरस गायकी है ये वो लोग हैं। जो सच्ची शिक्षण प्रक्रिया से सीखे नहीं हैं। इस भ्रांति के साथ ये भी भांति है कि लड़कियां ध्रुवपद गायन के लिये अमान्य है ये गायकी पुरुष प्रधान है। लेकिन आपने इस भ्रांति को। समूल नष्ट कर दिया। आपका मानना है कि कोई भी गायकी कठिन नहीं होती जरूरत है सच्चे मार्गदर्शन में शिक्षण – प्रशिक्षण –समर्पण की। आप कहती हैं रस्सी के नित अभ्यास से पत्थर में निशान बन जाता है ये तो हम सब का फ्लेक्सिबल गला है सब कुछ सम्भव है इस धारणा के साथ आपने मेहनत, समर्पण रखा। आज आप आकाशवाणी दूरदर्शन ए ग्रेड कलाकार हैं आप का ध्रुवपद गायन किसी मायने में पुरुष प्रधान गायकी से कम नहीं है। आपकी आलापचारी, गमक लेने और ताल–लयकारी पूर्ण गायन अद्भुत एवं रोमांचकारी है मुझे लगता है हमें डॉ. मधु भट्ट तैलंग के इस अद्भुत योगदान को जानना चाहिए एवं इस अमूल्य धरोहर का शिक्षण – प्रशिक्षण करना चाहिए और डा. मधु भट्ट तैलंग जैसी शख्सियत के सकारात्मक जीवन को आत्मसात करते हुए सच्चा इंसान बनना चाहिए। आप हम एक अच्छे इंसान बन जायेंगे तब सारी समस्याओं का निस्तारण हो जायेगा, सकारात्मक विचार हर समस्या का समाधान होते हैं।

वर्तमान संदर्भ को लेकर

आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व सिखाता है हमें हमेशा वर्तमान संदर्भित रहना चाहिए। आपका मत है कि हमें भूतकाल की गलतियों को त्याग कर सच्चे मार्ग पर चलना चाहिए और समय– समय पर अपने आप को अपडेट करते रहना चाहिए चाहे वो जीवन का पक्ष हो या शिक्षण – प्रशिक्षण – गायन का हो ये बहुत जरूरी है ताकि हमारा मन जड़त्व को प्राप्त ना करे और नीरस बोरियत से हमारा हर कौशल अछूता रहे। ताकि हमारे कृतित्व एवं व्यक्तित्व में सकारात्मक पहलुओं का समावेश हो सके। हाल ही में ''जयपुर की ध्रुवपद गायिका आर यू के संगीत विभाग की फेकल्टी ऑफ फाइन आर्ट डॉ मधु भटट को बोर्ड ऑफ स्टडीज संगीत विषय की एक्सपर्ट मेम्बर के तौर पर तीन बर्ष के लिए बडौदा यूनिवर्सिटी ने नियुक्त किया है ''5

व्यक्तित्व एवं कृतित्व को लेकर

इस शोधपत्र के माध्यम से आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व को लेकर आमजन तक ये संदेश देना है कि इस दुनिया में हम मात्र खाने– पीने –जीने के लिए ही आए हैं हमें अपने अन्दर छुपे अवधान को पहचानना जरूरी है और सच्चे गुरु, सच्ची शिक्षा के साथ जुड़ाव रखना चाहिए। जीवन का नाम सतत साधना, सतत संघर्ष, सतत जागरुकता है। मैं विगत एक दशक से देख रहा हूँ कि आप पर यश, धन –माया मोह से परे का जीवन रहा है आप सब तरह से सक्षम हैं लेकिन मैंने आपकी हर वर्कशाप मे देखा है कि आप एक साधारण के साथ असाधारण महिला गायिका प्रशिक्षिका, विदुषी वाग्गेयकार। हर वर्ष गर्मियों में लोग घूमने – फिरने जाते हैं लेकिन मैंने वर्षों से भरी गर्मी में एक महीना जून वर्कशाप हर वर्ष देखा है मात्र फारमल्टी के लिए नहीं सच्चे मायने में, खेल– खेल माध्यम से ध्रुवपद परम्परा।का निःशुल्क प्रशिक्षण पाने का सौभाग्य मुझे भी सतत मिला है। आप जैसी शख्सियत के सानिध्य में वर्कशाप माध्यम से सम्पर्क में आये विद्यार्थी आज अधिकांशतः गवर्मेंट जॉब एक अच्छे ध्रुवपद कलाकार हैं आप पर बाबूजी (पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग) स्वर्णाक्षरित होने वाली ध्रुवपद की आन बान शान का सम्पूर्ण समर्पण रहा है। बाबूजी की शिष्य परम्परा भी बहुत लम्बी है एक हाल ही ताजा वाक्या बताता हूँ कि राजस्थान विश्वविद्यालय में जुलाई 2018 में रिफ्रेशर कोर्स में आप की नोट स्पीकर के रूप नवाचार और शिक्षण कौशल पर व्याख्यान दे रही थी साथ ही शिक्षण में नवाचार पर कुछ गायन की बानगी प्रस्तुत की उसके बाद जब प्रश्नकाल आया तो सभी प्रश्न शून्य थे सब तारीफें कर रहे थे। एक कोटा विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ने कहा कि मेम मैं आपका धन्यवाद ज्ञापन करती हूँ कि आपने मुझे तीस वर्ष की गुरुजी के गायन से रूबरू करा दिया जब मैं वनस्थली विद्यापीठ में अध्ययन रत थीं बाबूजी गायन के प्रोफेसर थे मैं संगीत से नहीं थी। बाबूजी के सच्चे ऑबजर्वन ने मेरी गायन में अभिरुचि विकसित की और उस समय मैंने दो अंतरमहाविद्यालय में गोल्ड मैडल जीते। ऐसे बाबूजी को कोटि– कोटि प्रणाम कहना। इस वाकये से अंदाजा लगा सकते हैं कि आप किस परम्परा से निकली हो। ऐसा घर ऐसी माँ जिसने आम लड़कियां नहीं साक्षात इतिहास को जन्म दिया। आपकी बड़ी बहिन निशा भट्ट तैलंग संगीत विभागाध्यक्ष बूंदी के बाद महाविद्यालय प्राचार्य रहीं और जालौर से प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त हैं। छोटी बहिन आरती भट्ट तैलंग रेही राजस्थान विश्वविद्यालय में असोसिएट प्रोफेसर हैं। आपकी सभी बहिन और भाई भी सुबोध कॉलेज में संगीत लेक्चरार के साथ पंचतंत्री वीणा वादक हैं। आपके वर्कशाप में जुड़े डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा एवं श्री ओम प्रकाश नायर (शोधार्थी) उम्दा उभरते ध्रुवपद गायक के रूप में आपके निर्देशन में शिक्षा लेते हुए शोधकार्य तक पहुचे हैं एवं आपके सानिध्य में सतत साधनारत हैं। ऐसे कितने ही साधक हैं जो सिर्फ अभिरुचि के लिए सानिध्य में आपसे जुड़े और आज डॉक्टरेट हो चुके और शोधरत हैं उसी श्रंखला में प्रदीप टॉक, मैनेजर लाल बैरवा, परसराम, बाबूलाल मीणा, प्रतिभा चौहान वर्तमान शोधरत हैं। यह सब आपके आत्मीय सकारात्मक, स्नेहिल व्यवहार एवं सच्चे कौशल के प्रति समर्पण का ही प्रतिफल है। अतः कहा जा सकता है कि आप सच्चे मायने में एक ऐसा व्यक्तित्व एवं कृतित्व हैं जिसको शब्द एवं भावों से मापा नहीं जा सकता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* (Part-1) September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

डॉ. मधु भट्ट तैलंग – वंशावली

(लगभग 500 वर्षों का इतिहास)

श्री कृष्ण जी (सन् 1535)

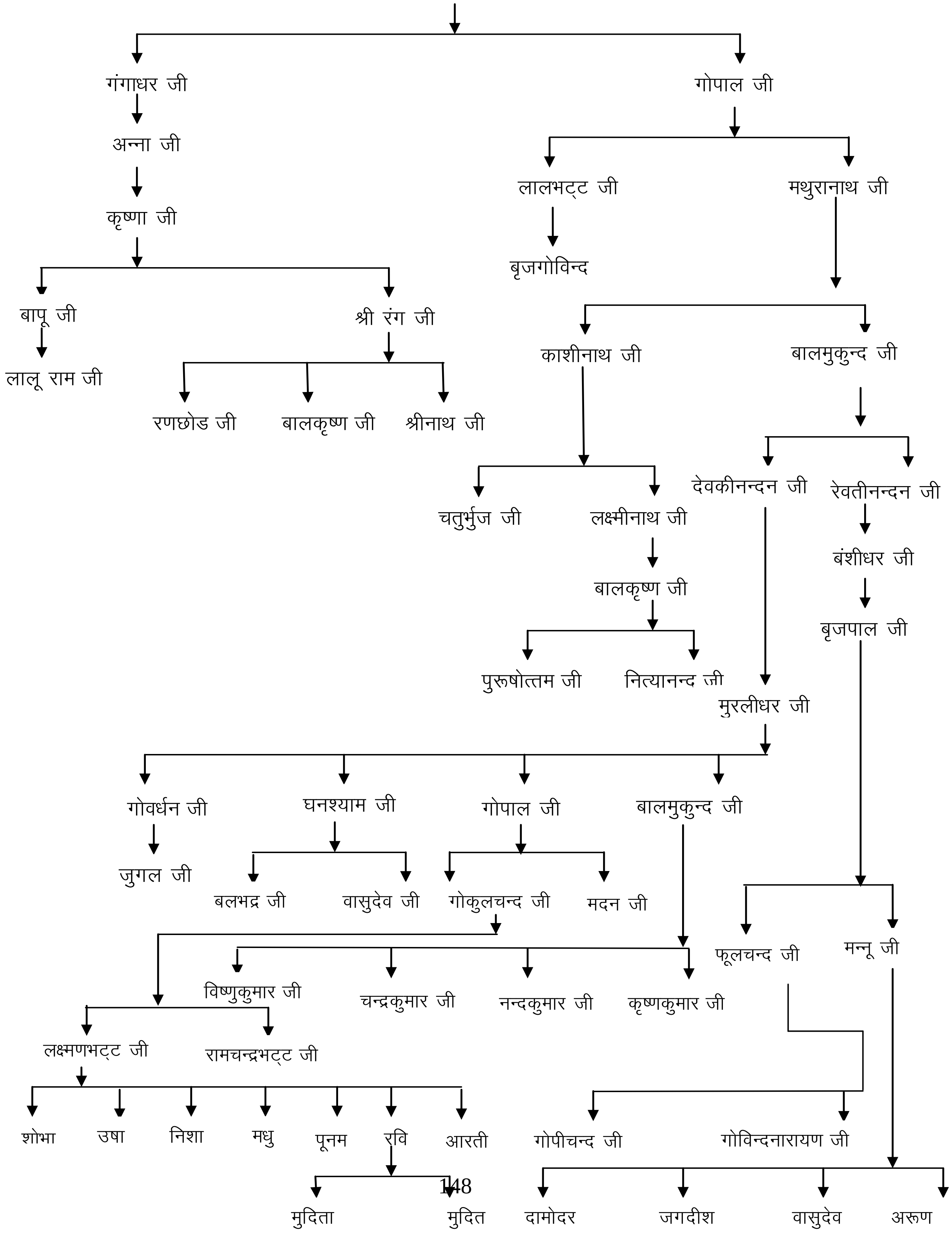

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. मधु भट्ट तैलंग वार्षिकांक, ध्रुवावाणी 2015 पृ.सं. –18, इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट,जयपुर*
2. *डॉ. मधु भट्ट तैलंग रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र वार्षिकांक ध्रुवावाणी 2015 पृ.सं.–1,जयपुर*
3. *संदर्भ – जीवन परिचय (बायोडेटा) डॉ. मधु भट्ट तैलंग पृष्ठ संख्या –0*
4. *डॉ. मधु भट्ट तैलंग,ध्रुवावाणी ''इन्टरनेशनल ध्रुवपद धाम ट्रस्ट एवं रसमंजरी संगीतोपासना केन्द्र, ब्रह्मपुरी,जयपुर, पृष्ठ संख्या–17 संस्करण 2015*
5. *https ;//www.bhasker.com news*
6. *Hindustani.Radiowabe.in*